P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-1* April- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

जनपद मेरठ में महिला शिक्षण संस्थाओं का एक भौगोलिक अध्ययन

धनवीर सिंह
शोधार्थी,
भूगोल विभाग,
दिगम्बर जैन कॉलिज,
बड़ौत, बागपत,
उ० प्र०

सारांश

मानव को एक उपयोगी संसाधन बनाने का कार्य शिक्षा करती है और शिक्षा के विकास का कार्य शिक्षण संसाधनों पर निर्भर करता है। शिक्षा मानव के सर्वांगीण विकास का नियामक तत्व है, जिसके कारण मानव को धरातल का सर्वश्रेष्ठ प्राणी कहा जाता है। शिक्षा न केवल दक्षता, बढ़ाने का साधन है, अपितु व्यक्तित्व एवं सामजिक जीवन की समग्र गुणवत्ता को स्तरोन्नत करने का भी एक कारगर साधन है। क्षेत्रीय स्तर पर शिक्षण संसाधनों की सुविधाऐं उस क्षेत्र में अधिक विकसित हैं, जहां पर आर्थिक विकास की दर उच्च है। परिणाम स्वरूप आर्थिक दृष्टि से उन्नत व्यक्ति ही शैक्षणिक सुविधाओं का लाभ उठा सकता है। अध्ययन क्षेत्र जनपद मेरठ में महिला शिक्षण संसाधनों के वितरण में क्षेत्रीय विषमता स्पष्ट रूप से देखने को मिलती है। उन पर जनसंख्या का अत्यधिक दबाव तथा शिक्षक व छात्र का अनुपात उच्च स्तर पर है। महिला शिक्षण संसाधनों के क्षेत्रीय वितरण में विषमता के कारण ही साक्षरता के स्तर में असमानता दिखलाई पड़ती है। वास्तव में शैक्षिक सुविधा मानव विकास का एक आधारभूत अवस्थापनात्मक तत्व है, जिसके माध्यम से वह अपने ज्ञान–विज्ञान का प्रचार–प्रसार करता है और यही विकासात्मक प्रवृत्ति उसे प्रगति के पथ पर अग्रसर करती है।

मुख्य शब्द : महिला, शिक्षण, संसाधन, सामाजिक, आर्थिक, विकास, समानता, विषमता।

प्रस्तावना

शिक्षा राष्ट्र निर्माण की आधारशिला है। शिक्षा के बिना किसी सभ्यता एवं संस्कृति के विकास की कल्पना नहीं की जा सकती। यह समाज एवं संस्कृति को गतिशील बनाने, विकास एवं शोधन की अनिवार्य कड़ी है। यह समाज में लोगों के अन्दर नैतिक मूल्यों एवं संस्कृति का विकास करती है, जिसके परिणाम स्वरूप मानव में मनसा, वाचा, कर्मणा का भाव जागृत होता है जिससे समाज का चहुमुखी विकास सम्भव होता है। ऐसे में प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षित करना आवश्यक ही नहीं बल्कि अनिवार्य व महत्वपूर्ण भी है। महिला समाज का एक अभिन्न अंग है। "जब एक पुरुष शिक्षित होता है तो व्यक्ति शिक्षित होता है और जब एक नारी शिक्षित होती है तो पूरा एक परिवार शिक्षित होता है।" किसी भी देश की संस्कृति उसका इतिहास और भाव–भाषा वहां की स्त्रियों के विकास, प्रगति और समृद्धि में परिलक्षित होता है। एक फ्रांसीसी विद्वान का इस सम्बन्ध में कहना है कि "किसी भी समाज की सभ्यता का अनुमान उस समाज में स्त्री को दिए गए आदर द्वारा लगाया जा सकता है।" कहा जाता था– "यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवताः" भारतीय समाज के इतिहास का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि वैदिक काल में स्त्री को समाज में ऊँचा स्थान प्राप्त था। सभी सामाजिक एवं धार्मिक क्रियाकलापों में उसकी सहभागिता थी।

अशिक्षित व्यक्ति प्रायः परिवर्तनों के प्रति उदासीन रहता है। वह अपनी रूढ़िवादी मान्यताओं के प्रति विश्वस्त रहता है। सामाजिक और आर्थिक प्रगति तथा राष्ट्रीय एकीकरण के लिए शत्–प्रतिशत साक्षरता आवश्यक है। आधुनिक जीवन–शैली, कर्त्तव्य–दायित्व बोध, राष्ट्रीय चरित्र निर्माण, नैतिक मूल्यों का संरक्षण इत्यादि सभी के लिए शिक्षित होना अनिवार्य है। सभी का सर्वांगीण विकास शिक्षा का मूल मंत्र है। सभी को शिक्षा प्रदान करने के लिए संसाधनों का अनुकूल होना अनिवार्य है। ग्रामीण एवं नगरीय स्तर पर शिक्षण संसाधनों के स्थानिक संगठन, वितरण तथा उन पर जनसंख्या की निर्भरता में काफी अन्तर देखने को मिलता है। यद्यपि महिला साक्षरता में वृद्धि हुई है परन्तु महिलाओं के लिए शिक्षण संस्थान उस अनुपात में उपलब्ध नहीं है, जिस अनुपात में

आवश्यकता है। प्राथमिक स्तर के शिक्षण संस्थाओं से लेकर उच्च स्तर तक की शिक्षण संस्थाओं में महिला शिक्षण संस्थाऐं अति अल्प मात्रा में हैं।

शिक्षा में लैंगिक अन्तराल की समस्या का समाधान आसान नहीं है। असमानता की परतों एवं जाति तथा समुदाय आधारित लाभबंदी की बढ़ती घटनाओं को देखते हुए नामांकन एवं बदलाव के मानक सूचकों से परे जाने एवं स्कूलों में बच्चों के अनुभव को गहराई से देखने की आवश्यकता है। शिक्षा में लैंगिक समानता की प्रगति मापने वाले उपकरण समाज में व्याप्त तथा वर्तमान शिक्षा व्यवस्था द्वारा बढ़ाई जा रही असमानताओं की बनावट के बारे में बहुत कम बताते हैं। शिक्षा का मूलभूत उद्देश्य व्यक्ति की ऐसी स्वतंत्रता है जो उसके जीवन में पूर्णता की अनुभूति जगा सके, सबके बीच समानता लाए, व्यक्तिगत एवं सामूहिक आत्म निर्भरता लाए तथा राष्ट्रीय एकता पर बल दे। बालिका शिक्षा को बढ़ावा देकर देश में विद्यमान ज्वलंत समस्याओं का मुकाबला किया जाना संभव है। शिक्षा के माध्यम से बालिकओं में सही दृष्टिकोण, सही विचार और निर्णय लेने की क्षमता पैदा हो सकती है। महिला न केवल स्वयं लाभांवित होती है बल्कि भावी पीढ़ी भी लाभांवित होती है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र में महिला शिक्षण संस्थानों का अध्ययन करने का प्रमुख उद्देश्य महिलाओं के सामाजिक विकास में साक्षरता की भूमिका को ज्ञात करना तथा महिलाओं की जनसंख्या के अनुपात में शिक्षण संसाधनों की उपलब्धता को ज्ञात करना है। प्रस्तुत शोध के उद्देश्य निम्नवत् हैं–

1. अध्ययन क्षेत्र में उपलब्ध महिला शिक्षण संसाधनों की उपलब्धता तथा स्थानिक वितरण व संगठन का अध्ययन करना।
2. अध्ययन क्षेत्र में महिला साक्षरता के स्तर तथा प्रतिरूप को ज्ञात करना।
3. अध्ययन क्षेत्र में उपलब्ध महिला शिक्षण संसाधनों का वर्गीकरण, पदानुक्रम तथा कोटि को प्राप्त करना।
4. अध्ययन क्षेत्र में महिला शिक्षण संसाधनों में उपलब्ध आधारभूत सुविधाओं का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनाऐं

प्रस्तुत शोध को पूर्ण करने हेतु निम्नलिखित शोध परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है–

1. अध्ययन क्षेत्र में महिला शिक्षण संसाधन सह–शिक्षण संसाधनों से अधिक हैं।
2. अध्ययन क्षेत्र में महिला शिक्षण संसाधन नगर के समीप अवस्थित हैं तथा उनके मध्य स्थानिक दूरी अपेक्षाकृत कम है।
3. अध्ययन क्षेत्र में महिला शिक्षण संसाधनों की उपलब्धता सूचकांक उच्च स्तर को प्राप्त करता है।
4. अध्ययन क्षेत्र में शिक्षण संसाधनों के विकसित होने से महिला साक्षरता में वृद्धि हुई है।

विधि तन्त्र

प्रस्तुत शोध को पूर्ण करने हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक आंकड़े अध्ययन क्षेत्र से व्यक्तिगत साक्षात्कार विधि का प्रयोग करके प्राप्त किये गये हैं, जबकि द्वितीयक आंकड़े जिला सांख्यिकी पत्रिका, जनपद मेरठ, शोध ग्रन्थों, विभिन्न पुस्तकालयों, आख्याओं, गजेटियरर्स तथा पत्रिकाओं एवं शोध पत्रों से प्राप्त किये गये हैं। प्राप्त आंकड़ों से सांख्यिकीय विधियों द्वारा समस्या के स्तर तथा प्रतिरूप को प्राप्त किया गया है। आंकड़ों को तालिकाओं में व्यवस्थित कर समस्या को प्रदर्शित करने का प्रयास किया गया है।

साहित्यावलोकन

प्रस्तुत शोध महिलाओं के सामाजिक एवं आर्थिक विकास से सम्बन्धित है, जिसमें महिला शिक्षण संसाधनों का स्थानिक वितरण तथा संगठन का अध्ययन किया गया है। महिला शिक्षण संसाधन महिला सशक्तिकरण का प्रमुख आधार है, क्योंकि शिक्षा के बिना किसी भी प्रकार के विकास की कल्पना नहीं की जा सकती है। महिलाओं के सामाजिक एवं आर्थिक विकास तथा शिक्षण संसाधनों से सम्बन्धित अनेक विद्वानों ने शोध कार्य किया है, जिनके शोध कार्य को कालक्रमानुसार निम्न प्रकार से व्यवस्थित किया गया है। ट्रिवार्था (1953) ने "A Care for Population Geography" नामक लेख में कहा है कि साक्षरता का तात्पर्य जनसंख्या के ऐसे वर्ग से लगाया जाता है जो एक या अधिक भाषाओं में अपने विचारों को लिखकर व्यक्त कर सके तथा लिखे हुए शब्दों को पढ़कर समझ सके। अतः साक्षरता ही किसी क्षेत्र के सामाजिक विकास का सूचक है। चांदना एवं सिधू (1980) ने अपनी पुस्तक "जनसंख्या भूगोल" में लिखा है कि साक्षरता ही वह कारण है, जो समाज में गतिशीलता पैदा करती है। एल० बस्ती (1983) ने योजना नामक पत्रिका में "Education and National Development Plan" विषयक लेख प्रस्तुत किया। रानी (1986) ने "महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता" के सन्दर्भ में शोध किया। अन्ना (1990) ने "सामाजिक–आर्थिक विकास में महिला उद्यमिता की भूमिका" के सन्दर्भ में शोध कार्य किया। जयंतिया (1999) ने महिलाओं के विकास में शिक्षा को सर्वोपरि माना। संगीता (2004) ने सामाजिक एवं आर्थिक विकास का प्रमुख आधार साक्षरता तथा शिक्षण संसाधनों को बताया। रंजनी (2007) ने महिलाओं के आर्थिक विकास में साक्षरता को सर्वोपरि माना। अहमद (2008) ने अपने अध्ययन में "साक्षरता तथा शिक्षण संसाधनों" को महिला उद्यमिता के विकास में अहम माना। ग्रेस (2011) ने "ग्रामीण विकास एवं महिला उद्यमिता" के सन्दर्भ में साक्षरता तथा शिक्षण संसाधनों की उपयोगिता पर शोध कार्य किया। शर्मा (2016) ने "शिक्षा में प्रौद्योगिकी" विषय पर एक लेख प्रस्तुत किया। विमला (2016) ने "योजना पत्रिका में महिला एवं बालिका शिक्षा" पर एक लेख प्रस्तुत किया। चडढा (2016) ने भारत में समावेशी शिक्षा की रूपरेखा विषय पर एक लेख योजना पत्रिका में प्रस्तुत किया। यादव (2016) ने भारत में शैक्षिक नीतियों एवं कार्यक्रमों से महिला सशक्तिकरण नामक शीर्षक से योजना पत्रिका में एक लेख प्रस्तुत किया।

अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत शोध के लिए जनपद मेरठ को चुना गया है। जनपद मेरठ का भौगोलिक क्षेत्रफल 2590 वर्ग किमी०

है। इसका अक्षांशीय विस्तार 28º57' उत्तरी अक्षांश से 29º02' उत्तरी अक्षांश तक तथा देशान्तरीय विस्तार 77º40' पूर्वी देशान्तर से 77º45' पूर्वी देशान्तर के मध्य अवस्थित है। जनपद मेरठ की उत्तरी सीमा पर मुजफ्फरनगर सीमा पर बागपत, दक्षिणी सीमा पर गाजियाबाद, उत्तर पूर्वी सीमा पर बिजनौर तथा अमरोहा जनपद अवस्थित है। गंगा नदी जनपद मेरठ की पूर्वी सीमा पर प्राकृतिक सीमा तथा हिण्डन नदी पश्चिमी सीमा पर प्राकृतिक सीमा रेखा का निर्माण करती है। यह गंगा तथा हिण्डन नदियों के दोआब में अवस्थित एक कृषि उपजाऊ क्षेत्र है। इस जनपद में तीन तहसील (सरधना, मेरठ, मवाना), 12 विकास खण्ड (सरूरपुर खुर्द, सरधना, दौराला, मवाना कलां, हस्तिनापुर, परीक्षितगढ़, माछरा, रोहटा, जानी खुर्द, मेरठ, खरखौदा, रजपुरा) 92 न्याय पंचायत तथा 667 गॉव सम्मिलित हैं। वर्ष 2011 के अनुसार यहां की कुल जनसंख्या 34.43 लाख, जनसंख्या घनत्व 1330 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी०, लिंगानुपात 872, कुल साक्षरता 72.84%, ग्रामीण जनसंख्या 48.92% तथा नगरीय जनसंख्या 51.08% है।

शिक्षण संसाधनों का स्थानिक वितरण एवं वर्गीकरण

अध्ययन क्षेत्र जनपद मेरठ में शिक्षण संसाधनों में प्राथमिक विद्यालय से लेकर उच्च शिक्षण संसाधन उपलब्ध हैं। अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से जनपद मेरठ के शिक्षण संसाधनों को निम्न प्रकार से वर्गीकृत कर अध्ययन किया गया है–

सारणी–1

जनपद मेरठ में शिक्षण संसाधनों का वर्गीकरण, वर्ष 2016

क्र०सं०	शिक्षण संसाधन	कुल	बालिका	ग्रामीण	नगरीय
1.	प्राथमिक विद्यालय	2329	0	1579	750
2.	उच्च प्राथमिक विद्यालय	1259	693	689	570
3.	माध्यमिक विद्यालय	401	87	203	198
4.	वैकल्पिक शिक्षा केन्द्र	86	0	3	83
5.	महाविद्यालय	01	01	01	0
6.	स्नातकोत्तर महाविद्यालय	12	4	3	9
7.	औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान	5	1	0	5

स्रोत– जिला सांख्यिकी पत्रिका जनपद मेरठ, वर्ष 2016

उपरोक्त सारणी के अनुसार अध्ययन क्षेत्र जनपद मेरठ में कुल प्राथमिक विद्यालय 2329 है, जिसमें 67.80% ग्रामीण तथा 32.20% नगरीय क्षेत्र में अवस्थित है। इन प्राथमिक विद्यालयों में बालिकाओं के लिए अलग से कोई विद्यालय नहीं है, अर्थात् यह सभी प्राथमिक विद्यालय सह–शिक्षा के अन्तर्गत सम्मिलित हैं। उच्च प्राथमिक विद्यालय 1259 है, जिसमें 54.73% ग्रामीण तथा 45.27% नगरीय हैं। उच्च प्राथमिक विद्यालयों में 55.04% विद्यालय बालिकाओं के लिए हैं। माध्यमिक विद्यालय 401 हैं, जिसमें 50.62% ग्रामीण तथा 49.38% नगरीय क्षेत्र में सम्मिलित हैं। माध्यमिक विद्यालयों में 21.70% बालिकाओं के लिए हैं। वैकल्पिक शिक्षा केन्द्र 86 हैं, जिनमें 3.49% ग्रामीण तथा 96.51% नगरीय है। यहां पर कोई भी वैकल्पिक शिक्षा केन्द्र बालिकाओं के लिए नहीं है। महाविद्यालय 1 है, जो ग्रामीण क्षेत्र में अवस्थित है और वह महिलाओं के लिए है। स्नातकोत्तर महाविद्यालय 12 है, जिनमें 25% ग्रामीण तथा 75% नगरीय क्षेत्र में अवस्थित है। महिलाओं के लिए स्नातकोत्तर महाविद्यालय 4 हैं, जो कुल स्नातकोत्तर महाविद्यालय का 33.33% है। औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान 5 हैं, जिनमें 1 प्रशिक्षण संस्थान महिलाओं के लिए है। ग्रामीण क्षेत्र में एक भी प्रशिक्षण संस्थान उपलब्ध नहीं है।

ग्राफ सं०–1

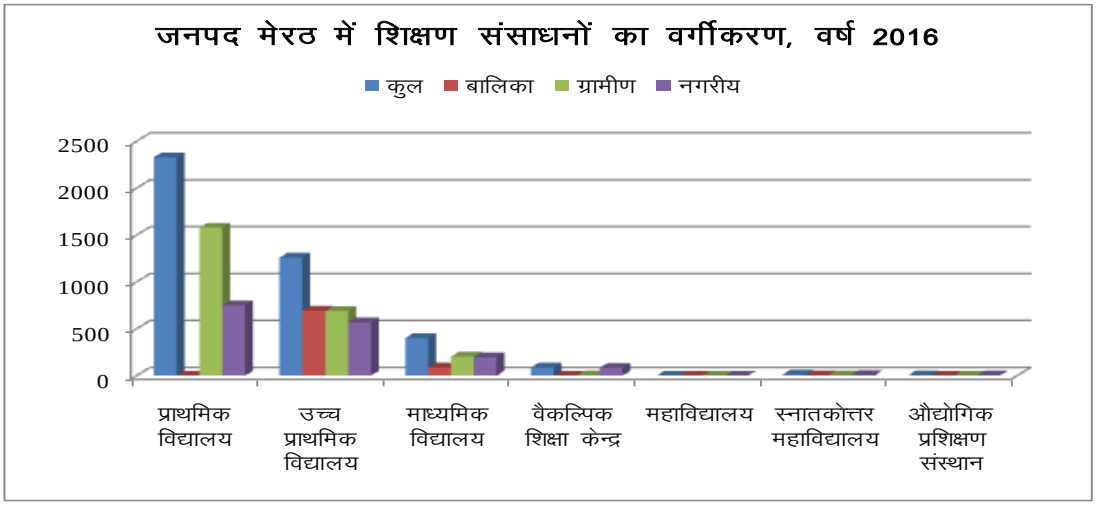

सारणी–2

जनपद मेरठ में महिला शिक्षण संसाधनों का स्थानिक वितरण, वर्ष 2016

क्र० सं०	विकास खण्ड	प्राथमिक विद्यालय	उच्च प्राथमिक विद्यालय	माध्यमिक विद्यालय	वैकल्पिक शिक्षा केन्द्र	महाविद्यालय	स्नातकोत्तर महाविद्यालय	औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान
1.	सरूरपुर खुर्द	0	30	2	0	0	0	0
2.	सरधना	0	28	5	0	1	0	0
3.	दौराला	0	25	4	0	0	0	0
4.	मवाना कलां	0	35	3	0	0	0	0
5.	हस्तिनापुर	0	45	1	0	0	0	0
6.	परीक्षितगढ़	0	30	2	0	0	0	0
7.	माछरा	0	40	2	0	0	0	0
8.	रोहटा	0	40	3	0	0	0	0
9.	जॉनी खुर्द	0	40	1	0	0	0	0
10.	मेरठ	0	30	2	0	0	0	0
11.	रजपुरा	0	40	2	0	0	0	0
12.	खरखौदा	0	45	1	0	0	0	0
योग ग्रामीण		**0**	**428**	**28**	**0**	**1**	**0**	**0**
योग नगरीय		**0**	**265**	**59**	**0**	**0**	**4**	**1**
योग जनपद		**0**	**693**	**87**	**0**	**1**	**4**	**1**

स्रोत– जिला सांख्यिकी पत्रिका जनपद मेरठ, वर्ष 2016

उपरोक्त सारणी के अनुसर अध्ययन क्षेत्र जनपद मेरठ में महिला शिक्षण संसाधनों के स्थानिक वितरण को दर्शाया गया है, जिसमें प्राथमिक स्तर पर एक भी विद्यालय बालिकाओं के लिए अध्ययन क्षेत्र में उपलब्ध नहीं है। उच्च प्राथमिक विद्यालय 693 है, जिनमें 61.76% ग्रामीण तथा 38.24% नगरीय क्षेत्र में अवस्थित हैं। विकास खण्ड हस्तिनापुर तथा रजपुरा में 45–45 उच्च प्राथमिक विद्यालय, माछरा, रोहटा, जॉनी खुर्द तथा खरखौदा में 40–40 विद्यालय हैं जबकि शेष विकास खण्डों में 28–35 उच्च विद्यालय अवस्थित हैं। माध्यमिक विद्यालय कुल 87 हैं, जिनमें 32.18% ग्रामीण तथा 67.82% नगरीय क्षेत्र में अवस्थित हैं। वैकल्पिक शिक्षा केन्द्र कोई भी अध्ययन क्षेत्र में महिलाओं के लिए उपलब्ध नहीं है। महाविद्यालय 1 तथा स्नातकोत्तर महाविद्यालय 4 हैं, जो नगरीय क्षेत्र में अवस्थित है। महिलाओं के लिए औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र 1 है, जो नगरीय क्षेत्र में अवस्थित है।

सारणी–3

जनपद मेरठ में महिला शिक्षण संसाधनों का स्थानिक संगठन, वर्ष 2016

क्र० सं०	शिक्षण संसाधन	संख्या	औसत दूरी (किमी०)	प्रति इकाई पर महिला जनसंख्या की निर्भरता
1.	प्राथमिक विद्यालय	0	0	0
2.	उच्च प्राथमिक विद्यालय	693	4.02	2335
3.	माध्यमिक विद्यालय	87	31.99	18597
4.	वैकल्पिक शिक्षा केन्द्र	0	0	0
5.	महाविद्यालय	1	54.69	1617946
6.	स्नातकोत्तर महाविद्यालय	4	27.35	404487
7.	औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान	1	54.69	1617946

स्रोत– जिला सांख्यिकी पत्रिका, जनपद मेरठ, वर्ष 2016

उपरोक्त सारणी के अनुसार अध्ययन क्षेत्र जनपद मेरठ में महिला शिक्षण संसाधनों का स्थानिक संगठन को दर्शाया गया है, जिसमें उच्च प्राथमिक विद्यालय एक दूसरे से 4.02 किमी० की दूरी, माध्यमिक विद्यालय 31.99 किमी०, महाविद्यालय, 54.69 किमी० स्नातकोत्तर महाविद्यालय 27.35 किमी० तथा औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान 54.69 किमी० के अन्तराल पर अवस्थित हैं। अध्ययन क्षेत्र में महिला शिक्षण संसाधनों के मध्य अन्तराल (दूरी) अत्यधिक है, अर्थात् स्थानिक संगठन विरल है तथा प्रति शिक्षण संसाधन पर जनसंख्या की निर्भरता अत्यधिक है।

सारणी–4

जनपद मेरठ में महिला शिक्षण संसाधनों की उपलब्धता का वितरण, वर्ष 2016

(प्रति हजार महिला जनसंख्या पर उपलब्धता)

क्र० सं०	विकास खण्ड	प्राथमिक विद्यालय	उच्च प्राथमिक विद्यालय	माध्यमिक विद्यालय	वैकल्पिक शिक्षा केन्द्र	महाविद्यालय	स्नातकोत्तर महाविद्यालय	औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान
1.	सरूरपुर खुर्द	0	0.38	0.03	0	0	0	0
2.	सरधना	0	0.40	0.07	0	0.01	0	0
3.	दौराला	0	0.38	0.06	0	0	0	0
4.	मवाना कलां	0	0.56	0.05	0	0	0	0
5.	हस्तिनापुर	0	0.81	0.01	0	0	0	0
6.	परीक्षितगढ़	0	0.37	0.02	0	0	0	0
7.	माछरा	0	0.54	0.03	0	0	0	0
8.	रोहटा	0	0.74	0.06	0	0	0	0
9.	जॉनी खुर्द	0	0.55	0.01	0	0	0	0
10.	मेरठ	0	1.03	0.07	0	0	0	0
11.	रजपुरा	0	0.46	0.02	0	0	0	0
12.	खरखौदा	0	0.78	0.02	0	0	0	0
योग ग्रामीण		**0**	**0.54**	**0.04**	**0**	**0**	**0**	**0**
योग नगरीय		**0**	**0.32**	**0.07**	**0**	**0**	**0.002**	**0.0006**
योग जनपद		**0**	**0.43**	**0.05**	**0**	**0.0006**	**0.002**	**0.0006**

स्रोत–जिला सांख्यिकी पत्रिका जनपद मेरठ, वर्ष 2016

उपरोक्त सारणी के अनुसार अध्ययन क्षेत्र जनपद मेरठ में महिला शिक्षण संसाधनों की उपलब्धता को प्रति हजार महिला जनसंख्या पर दर्शाया गया है, जिसमें प्राथमिक विद्यालय उपलब्धता 0, उच्च प्राथमिक विद्यालय की उपलब्धता 0.43, माध्यमिक विद्यालय 0.05, स्नातकोत्तर महाविद्यालय 0.002 तथा औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान की उपलब्धता 0.006 तथा महाविद्यालय की उपलब्धता 0.006 है। प्रति हजार महिला जनसंख्या पर शिक्षण संसाधनों की उपलब्धता अति न्यून है।

शिक्षण संसाधनों में शिक्षकों की उपलब्धता

अध्ययन क्षेत्र जनपद मेरठ में विभिन्न शिक्षण संस्थाओं में शिक्षकों की उपलब्धता सामाजिक एवं आर्थिक विकास को ज्ञात करने का एक प्रमुख सूचक है। शिक्षक तथा छात्रों के उपयुक्त अनुपात को व्यक्त करने तथा अल्पता को व्यक्त करके उस अनुपात में शिक्षकों को उपलब्ध कराकर शिक्षण कार्य में गुणात्मक वृद्धि की जा सकती है। अध्ययन क्षेत्र जनपद मेरठ में वर्ष 2016 के अनुसार शिक्षक तथा छात्रों के अनुपात को निम्न सारणी में व्यक्त किया गया है–

सारणी–5

जनपद मेरठ में शिक्षण संस्थाओं में शिक्षकों की उपलब्धता, वर्ष 2016

क्र० सं०	शिक्षण संस्थान	कुल	स्त्रियां	पुरुष	स्त्रियां (%)	पुरुष (%)	अन्तर
1.	प्राथमिक विद्यालय	11234	4905	6329	43.66	56.34	–12.68
2.	उच्च प्राथमिक विद्यालय	4593	2489	2104	54.19	45.81	8.38
3.	माध्यमिक विद्यालय	5985	1611	4374	26.92	73.08	–46.16
4.	वैकल्पिक शिक्षा केन्द्र	258	86	172	33.33	66.67	–33.34
5.	महाविद्यालय	6	2	4	33.33	66.67	–33.34
6.	स्नातकोत्तर महाविद्यालय	481	229	192	47.61	52.39	–5.28
7.	औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान	75	12	63	16.00	84.00	–68.00
योग		**22632**	**9334**	**13238**	**41.24**	**58.76**	**–17.52**

स्रोत– जिला सांख्यिकी पत्रिका जनपद मेरठ, वर्ष 2016

उपरोक्त सारणी के अनुसार अध्ययन क्षेत्र जनपद मेरठ में शिक्षण संस्थाओं में शिक्षकों की उपलब्धता को दर्शाया गया है, जिसमें प्राथमिक विद्यालयों में महिला शिक्षकों की संख्या पुरुषों से 12.68% कम है, माध्यमिक विद्यालयों में 46.16% कम, वैकल्पिक शिक्षण संस्थाओं में 33.34% कम, महाविद्यालय में 33.34% कम, स्नातकोत्तर महाविद्यालय में 5.28% तथा औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों में 17.52% कम है। केवल उच्च प्राथमिक विद्यालयों में महिला शिक्षकों की संख्या पुरुषों से 8.38% अधिक है।

ग्राफ सं०–2

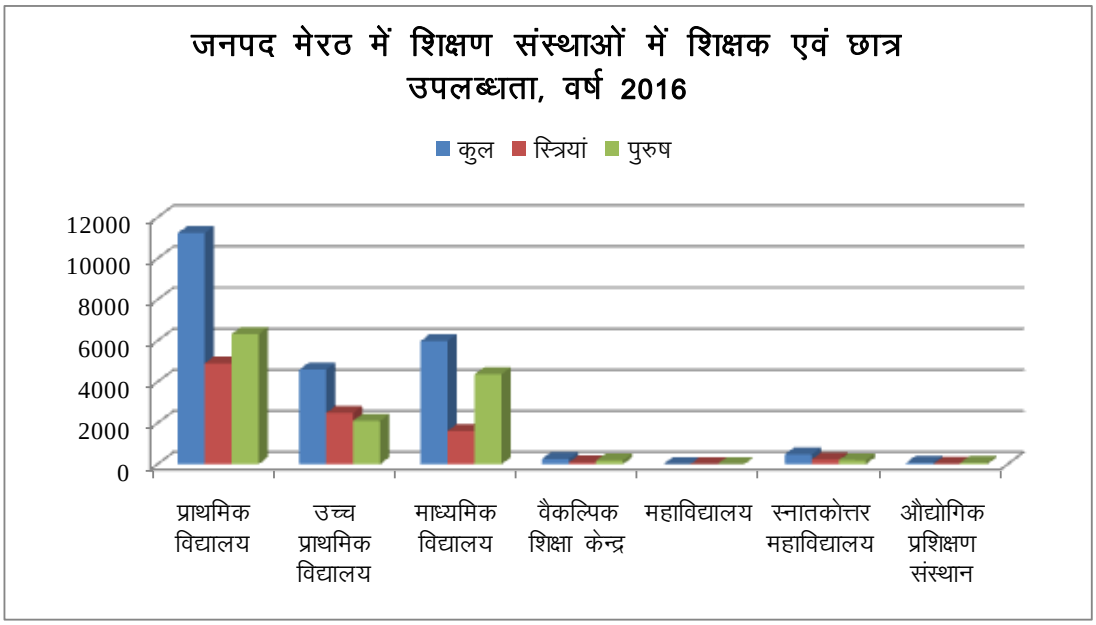

सारणी–6

जनपद मेरठ में शिक्षण संस्थाओं में शिक्षक एवं छात्र उपलब्धता, वर्ष 2016

क्र० सं०	शिक्षण संसाधन	कुल छात्र	कुल शिक्षक	प्रति शिक्षक छात्र उपलब्धता
1.	प्राथमिक विद्यालय	216047	11234	19.24
2.	उच्च प्राथमिक विद्यालय	202826	4593	44.20
3.	माध्यमिक विद्यालय	199680	5985	33.36
4.	वैकल्पिक शिक्षा केन्द्र	18480	258	71.63
5.	महाविद्यालय	1823	6	303.83
6.	स्नातकोत्तर महाविद्यालय	31700	145	218.62
7.	औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान	2076	75	27.68

स्रोत– जिला सांख्यिकी पत्रिका, जनपद मेरठ, वर्ष 2016

उपरोक्त सारणी में विभिन्न शिक्षण संस्थाओं प्रति शिक्षक छात्रों की उपलब्धता को दर्शाया गया है, जिसमें प्राथमिक विद्यालय में प्रति शिक्षक छात्र उपलब्धता 19.24, उच्च प्राथमिक विद्यालय में 44.20, माध्यमिक विद्यालय में 33.36, वैकल्पिक शिक्षा केन्द्रों में 71.63, महाविद्यालय में 303.83, स्नातकोत्तर महाविद्यालय में 218.62 तथा औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों में 27.68 है। उच्च शिक्षण संस्थान में प्रति शिक्षक छात्र उपलब्धता अधिक है, जबकि प्राथमिक स्तर पर कम है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध पत्र में महिला शिक्षण संस्थाओं, शिक्षण संस्थाओं में महिला, शिक्षकों की उपलब्धता तथा शिक्षण संस्थाओं के स्थानिक वितरण तथा संगठन का अध्ययन किया गया है, जिसमें जनपद मेरठ में ग्रामीण एवं नगरीय दोनों स्तर पर शिक्षण संस्थाओं के मध्य औसत दूरी अधिक है, अर्थात् शिक्षण संस्थाओं का स्थानिक संगठन विरलता को धारण करता है। प्राथमिक विद्यालय स्तर पर बालिकाओं के लिए ग्रामीण एवं नगरीय स्तर पर एक भी विद्यालय उपलब्ध नहीं है। वैकल्पिक शिक्षा केन्द्र महिलाओं के लिए अध्ययन क्षेत्र में उपलब्ध नहीं है। 16.17 लाख महिला जनसंख्या पर मात्र 1 महाविद्यालय तथा 1 प्रशिक्षण संस्थान उपलब्ध है। प्रति हजार महिलाओं की संख्या पर महिला शिक्षण संस्थाओं की उपलब्धता में उच्च प्राथमिक विद्यालय की उपलब्धता 0.43, माध्यमिक विद्यालय की उपलब्धता 0.05, महाविद्यालय की उपलब्धता 0.0006, स्नातकोत्तर महाविद्यालय की उपलब्धता 0.002 तथा औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों की उपलब्धता 0.0006 है। प्राथमिक विद्यालयों में महिला शिक्षकों की उपलब्धता पुरुषों की तुलना में 12.68% कम है। उच्च प्राथमिक विद्यालयों में महिला शिक्षकों की उपलब्धता 8.38% पुरुषों से अधिक है। प्रति शिक्षक छात्र की उपलब्धता प्राथमिक विद्यालय में 19.24, उच्च प्राथमिक में 44.20, माध्यमिक विद्यालय में 33.36, वैकल्पिक शिक्षा केन्द्र में 71.63, महाविद्यालय में 303.83, स्नातकोत्तर स्तर पर 218.62 तथा औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों में 27.68 है।

अध्ययन क्षेत्र जनपद मेरठ में प्रति हजार महिलाओं की जनसंख्या पर केवल विकास खण्ड मेरठ में उच्च प्राथमिक विद्यालय उपलब्धता 1.03 है, शेष सभी 11 विकास खण्डों में उच्च प्राथमिक विद्यालय उपलब्धता 1.00 से कम अर्थात् 0.37–0.81 के मध्य है। महिला माध्यमिक विद्यालयों की उपलब्धता प्रति हजार महिला जनसंख्या पर

अध्ययन क्षेत्र में 0.05 है, जिसमें ग्रामीण क्षेत्र में 0.04 तथा नगरीय क्षेत्र में 0.07 है। अध्ययन क्षेत्र में महिला शिक्षण संसाधनों के अभाव के बावजूद भी यहां पर महिला साक्षरता 63.98% जनपद स्तर पर, 68.21% नगरीय तथा 59.41% ग्रामीण स्तर पर है। महिलाओं के सामाजिक एवं आर्थिक विकास हेतु महिला साक्षरता में वृद्धि की आवश्यकता है और इसकी पूर्ति महिला शिक्षण संसाधनों को विकसित करके की जा सकती है।

सुझाव

अध्ययन क्षेत्र जनपद मेरठ में महिलाओं के सामाजिक एवं आर्थिक विकास को शिखर पर पहुंचाने के लिए प्राथमिक स्तर से उच्च स्तर तक की शिक्षण संस्थाऐं विकसित करनी होंगी। महिला साक्षरता में वृद्धि तभी संभव हो सकती है, जब प्राथमिक स्तर पर महिलाओं के लिए शिक्षण संसाधन विकसित किये जाऐं। अध्ययन क्षेत्र में महिला शिक्षण संस्थाओं के विकास हेतु निम्न सुझाव प्रस्तुत हैं–

1. तकनीकी शिक्षण संसाधन महिलाओं के लिए विकसित किये जायें, जिससे शिक्षा पूर्ण करने के पश्चात् वह स्वयं अपना कार्य कर सके।
2. प्राथमिक विद्यालय बालिकाओं के लिए स्थापित किये जाये ताकि प्रति हजार जनसंख्या पर न्यूनतम उपलब्धता को बढ़ाया जा सके।
3. ग्रामीण क्षेत्रों में प्राथमिक विद्यालयों को अंग्रेजी माध्यम कर दिया जाए ताकि सरकारी व निजी विद्यालयों के मध्य अंग्रेजी माध्यम की बुराई को समाप्त किया जा सके।
4. सभी शिक्षण संस्थाओं को यातायात एवं परिवहन के साधनों से जोड़ा जाए, जिससे पिछड़े क्षेत्रों तक भी उच्च शिक्षा की सुविधा प्राप्त हो सके।
5. महिला शिक्षण संस्थाओं में आधारभूत सुविधाऐं विकसित की जाए, जिससे छात्राओं को स्वच्छ वातावरण में शिक्षा ग्रहण करने का अवसर प्राप्त हो सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *Chandna, R.C. and Siddhu, M.S. (1980)- "Population Geography" Kalyani Publishers, New Delhi.*
2. *Tiwari, S.C. (2007)- Changing Pattern of Education in Gorakhpur District, North India Geographical Journal, Vol. 37, No.-1, June.*
3. *Triwartha, G.T. (1953)- A Care for Population Geography, Annals of the Association of American Geographers, Vol. 43.*
4. *Baruah, B. (2013)- Role of Electronic Media in Empowering Rural.*
5. *Goswami, L. (2013)- Education for Women Empowerment, ABHIBYAKTI- Annual Journal, Vol. 1, P. 17-18.*
6. *Kadam, R.N. (2012)- Empowerment of Women in India, An Attempt to Fill the Gender, Gap. International Journal of Science and Research Publication, Vol. 2, No. 6, P. 11-13.*
7. *Despande, S. and Sethi, S. (2010)- Role and Position of Women Empowerment in India, International Referred Research Journal, Vol. 1, No. 17, P. 10-12.*
8. *Sukumar, Basu (2004)- Women and Economic Development, Deep and Deep Publication Pvt. Ltd. New Delhi, P. 100.*
9. *Tripathi, A. (2017)- Educational Services and Level of Literary of Bastinagar, Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika, Vol. 5, No. 2, October 2017.*
10. *Ramchandran, V. (2016)- Women and Child Education : Indian Overview, Yojana Magazine, January, 2016.*
11. *Chaddha, A. (2016)- An Outline of Sustainable Education in India : Yojana Magazine, January, 2016.*